Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

सिरमौरी लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन

DR. DEV RAJ SHARMA
Associate Professor, Govt. Drgree College Sangrah, Himachal Pradesh

सार संक्षेपिका

किसी भी देश की संस्कृति उस देश की अमूल्य विरासत होती है। संस्कृति का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव सभ्यता का इतिहास। हिमाचल प्रदेश अपनी ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान में पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। हिमाचल का एक जिला सिरमौर जो इसके दक्षिण में स्थित है अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। स्वतन्त्रता से पूर्व यह जिला एक रियासत थी जो बाहरी संस्कृति के प्रभाव से मुक्त रही है। यहाँ का लोक संगीत मानस की आंतरिक भावनाओं का प्रतीक है जिससे आंचलित लोक परम्पराओं की सुगंध महक उठती है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत लोक गीतों के रूप में मुखरित हुई है। विभिन्न उत्सवों, त्योहारों, मेलों एवं ऋतुओं से सम्बंधित अनेक लोक गीत इस क्षेत्र में गाये जाते हैं। यहाँ के लोक गीतों में प्रेम, उत्साह, शोक, आशा-निराशा, हर्ष-विवाद, जीवन-मरण, एवं घटनाओं का उल्लेख रहता है। यहाँ के लोक गीत शास्त्रीय नियमों के बन्धन से स्वतन्त्र हैं। इस अमूल्य विधि को यहाँ के लोगों ने उतरोत्तर सुरक्षित रखा है। इस क्षेत्र के लोक गीतों को सुविधानुसार निम्न भागों में बांटा गया हैं-संस्कार गीत और परिवार विषयक, श्रृंगार एवं प्रेम विषयक, पर्व गीत, ऋतु गीत, नृत्य गीत तथा धार्मिक एवं ऐतिहासिक गीत। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार गीत यहाँ पर गायें जाते हैं। लोक गाथाओं में छीछा, कोमना, होकु, मोदना, नेगी नोतीराम, ठुंडु कमरोऊ, आदि प्रमुख है। इन गाथाओं को हार या हारुल के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ की हारें, वारे, पवाड़े, साके, गंगी, झूरी गीह, नाटी, रासा, हारुलें आदि प्राचीन संस्कृति के परिचायक हैं। सिरमौर के लोक गीतों का संगीतात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इनमें शास्त्रीय रागों की स्पष्ट एवं अपुष्ट छाया दृष्टिगोचर होती हैं साथ ही लोक तालों का भी शास्त्रीय तालो से सम्बंध दृष्टिगोचर होता है।

मुख्य शब्द:- *लोक, हार, गीह, संस्कृति, गाथा।*

भूमिका

लोक संगीत किसी भी राष्ट्र की एक विशिष्ट पहचान होती है। यह किसी भी देश की जीवन शैली, जीवन मूल्यों, उसके चिन्तन और चरित्र का सर्वोत्कृष्ट दर्पण होती है। यह वस्तुतः जनसामान्य में प्रचलित संगीत है जो परम्परागत रूप से चलता रहता है। भारत के उत्तरी क्षेत्र में हिमाचल राज्य स्थित है जो अपनी ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान में पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ के मेहनती और भोले-भाले लोगों में अपनी सांस्कृतिक विरासत को उत्तरोतर सुरक्षित रखा है। हिमाचल के बारह जनपदों में भाषा, धर्म, कला, संस्कृति, लोक संगीत खान-पान एवं रहन-सहन के विविध आयामों में भिन्नता देखने को मिलती है। लोक संगीत परम्परागत रूप से चली आने वाली वह लोक विरासत है जिसके प्राकृतिक रूप में न तो कोई परिवर्तन सम्भव है और न ही इसका लिपिबद्ध साहित्य उपलब्ध है। लोक संगीत लोक मानस की आन्तरिक भावनाओं का प्रतीक है जिससे आंचलित लोक परम्पराओं की सुगन्ध महक उठती है। जन-जन तक इसकी जड़ें असीम गहराई तक पहुँचकर भावनाओं रूपी वृक्ष को फलीभूत करती है। लोक संगीत स्वच्छंद, उन्मुक्त एवं प्राकृतिक कला है। यह शास्त्रीय नियमों के बन्धन से मुक्त है। यूँ तो हिमाचल के बारह जिले का लोक संगीत अपनी विशिष्ट पहचान रखता है परन्तु जिला सिरमौर का लोक संगीत अपनी विशिष्ट लोक शैली के कारण पूरे हिमाचल में अलग स्थान रखता है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत गीतों के रूप में मुखरित हुई है। विभिन्न उत्सवों, त्योहारों, मेलों एवं ऋतुओं से संबंधित अनेक लोक गीत इस क्षेत्र में गाये जाते हैं। यहाँ की प्राचीन परम्परा एवं सांस्कृतिक धरोहर को प्रमाणित करने की दिशा में लोक गीतों, लोक नृत्यों एवं लोक वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है।

साहित्य की समीक्षा

जिला सिरमौर स्वतन्त्रता से पहले एक रियासत थी हिमाचल प्रदेश के लिए प्रवेश द्वार होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ पर अनेक राजाओं ने शासन की बागडोर सम्भाली। दुर्गम एवं कठिन क्षेत्र होने के कारण इस पर्वतीय क्षेत्र की संस्कृति सुरक्षित रही। लोक साहित्य के अन्तर्गत गीत, कथाएँ, गाथाएँ एवं कहावतें आदि सम्मिलित होती हैं। लोक संस्कृति में लोक साहित्य का अन्तर्भाव होता है।

साधारण अथवा ग्रामीण जनता, जो प्रायः निरक्षर होती है, समय-समय पर अपनी आशा-निराशा, हर्ष-विवाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि तथा सुख दुःख आदि अभिव्यक्त करती है, वही लोक साहित्य है।[1] लोक साहित्य में लोक गीतों का प्रथम स्थान आता है। जिला सिरमौर के

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

लोक गीतों में ग्राम जीवन की सरल अभिव्यंजना रहती है। अतः सभी प्रकार के गीत लोक साहित्य में सुनने को मिलते हैं। इनमें धार्मिक, सामाजिक संस्कारों, उत्सवों, त्योहारों, पर्वों, ऋतुओं तथा देवी देवताओं से सम्बंधित गीत विशेष रूप से सुनने में आते हैं।

शोक की आवश्यकता

सिरमौर पर्वतीय जिला होने के कारण यहाँ के निवासियों, उनकी संस्कृति एवं साहित्य के विषय में व्यवस्थित कार्य का नितान्त अभाव रहा है। इस क्षेत्र में लोक गीतों, लोक गाथाओं, लोक नृत्यों का अपार भण्डार है तथा बाहरी संस्कृति के प्रभाव से यह क्षेत्र सुरक्षित है। यहाँ पर प्रत्येक त्योहार मेले एवं संस्कार इत्यादि उत्सव बड़े हर्ष एवं उल्लास से परम्परागत ढंग से मनाए जाते हैं। विभिन्न त्योहारों, ऋतुओं एवं संस्कारों से सम्बंधित अनेक गीत यहाँ के पुरुष एवं महिलाएँ नृत्य के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस दिशा में सुनियोजित शोध की आवश्यकता है ताकि भविष्य में भावी पीढ़ी इन लोक गीतों का आनन्द उठा सके।

सिरमौरी लोक गीतों का वर्गीकरण

आदि मानव कण्ठ से जो विकृत भाव कभी निकलते थे कालान्तर में लोक गीत बन गए। ये गीत खुले आकाश के नीचे खुली धरती पर एक छोर से दूसरे छोर तक अंकुरित हुए हैं। धरती ही इन गीतों की सृजक मां है, जिसके वक्ष स्थल से दूध पी कर ये पुष्ट हुए है। ये कहीं से उधार नहीं लिए गए हैं न ही कहीं से हवा में बह कर आते है। किसी व्यक्ति विशेष ने भी भजन की तरह इनका निर्माण नहीं किया है। सभी ने सुना सभी ने गाया और अपनी-अपनी भावी संततियों के लिए इन्हें सौंप दिया।[2]

यहाँ के लोक गीतों की सरस मधुरता न जाने कब से मानव हृदय को आन्दोलित करती आ रही है। यहाँ के लोक गीत शास्त्रीय नियमों के बन्धन से मुक्त है। इस अमूल्य नीधि को यहाँ के निवासियों ने उतरोत्तर सुरक्षित रखा है।

हिमाचली लोक गीत पर्वतीय जनता की संस्कृति और सभ्यता की अभिव्यक्ति करते हैं। इस प्रदेश के लोक गीत विविधतापूर्ण है और उसमें मानव की सभी प्रकार की आकांक्षाएँ समावेशित है। स्थूल रूप से इन लोक गीतों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-

- संस्कार गीत और परिवार विषयक
- श्रृंगार तथा प्रेम विषयक
- पर्व गीत
- ऋतु गीत
- नृत्य गीत
- धार्मिक तथा ऐतिहासिक गीत[3]

संस्कार तथा परिवार विषयक

हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह संस्कार सम्बंधी गीतों की बहुलता है। जिला सिरमौर में जन्म, वर्ष गांठ, मुंडन आदि संस्कार बड़े चाव से मनाये जाते हैं तथा इस अवसर पर बधाई गीत गाये जाते हैं।

जन्म संस्कार से सम्बंधित गीत बच्चे के जन्म के दसवें दिन दशुठन के अवसर पर गाये जाते है। ये गीत गाँव की महिलाओं द्वारा खुले आंगन में गाए जाते हैं। इसका उदाहरण निम्न प्रकार से है:-

धने होलर तेरा माता बड़ी खे, जिए कौख नढाया
धने होलर तेरे राम बड़े खे, जेणिए पाणी दा पैदा कराया।
धने होले तेरे माता खे, जिंएँ तेरा लेख बहाया

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

धने होलर तेरे दाई बड़ी खे, जिएँ तेरा जलम दलाया।

विवाह संस्कार

जिला सिरमौर में संस्कारों में दूसरा मुख्य स्थान विवाह संस्कारों का आता है। इस अवसर पर वर पक्ष एवं वधु पक्ष के अनेक गीत इस क्षेत्र में प्रचलित हैं जिन्हें केवल महिलाएँ ही गाती है। बटणा (उबटण) मलते समय यह गीत बहुत प्रसिद्ध है-

बटणा मलिए हे री दलिए, बाने आमा बटणा बाने जी रे अंग मलो
बटणे में पाऊँ री तेल, बाने बूआ बटणा बाने जी रे अंग मलो।

विवाह के अवसर पर गाँव की महिलाओं द्वारा 'पड़ुआ' गीत गाते हुए नृत्य किया जाता है जिसका उदाहरण इस प्रकार से है:-

बाने दी माता बाईर बुलाओ शुण लो बेड़े वालियो
बाने दा पिता बाईर बुलाओ शुण लो बेड़े वालियो
बाने दी बोबो बाईर बुलाओ शुण लो बेड़े वालियो
मारे बेड़े दा धुम धड़ाका शुण लो बेड़े वालियो।

श्रृंगार और प्रेम विषयक

भारतीय लोक साहित्य प्रेम-गीतों से समृद्ध और सजीव है। प्रेम की यह पवित्र भावना सिरमौरी लोक गीतों में बखूबी मिलती है। इस क्षेत्र की झूरी, गंगी, बींची एवं नारियां अपनी कोमल भावनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। श्रृंगार रस के अन्तर्गत संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार दोनों प्रकार के लोक गीत यहाँ पर गाये जाते हैं। लोक गीतों में इनकी विरह-व्यथा सहृदय व्यक्तियों में करुणा के भाव जगाती है। श्रृंगार रस से ओत-प्रोत गीत का उदाहरण इस प्रकार से है:-

दूरो देखिओ बे रे झूरिए, तेरे घोरो रा जाँदा
उरो बातों जाऊँ बिया बिसरी, झूरिये तेरा सांईसा नी जाँदा
भाभी बुलो बांठीणो, देवरो काला
ई का मुण्डु कोरिरों, गेहूँ मुजे माँडुआ राला

पर्व गीत

जिला सिरमौर में अनेक पर्व एवं त्योहार मनाये जाते हैं जैसे बिशु, मोण, गुगा पर्व हरियाली पर्व ग्यास पर्व, दिवाली, बुढ़ी दिवाली, माघी पर्व आदि। विभिन्न पर्वों के अलग-अलग गीत जिला सिरमौर में देखने को मिलते हैं। दिवाली के दिन गाई जाने वाली हार का उदाहरण प्रस्तुत है:-

मोले रे मुलाइये, हली केरी मुलाई
एथे आगे परेटुआ, तेरी हारुलो आई
खशणीए देशाटी लाई दे कोरणा छुई
मोयले मेरे कपड़े देणे छोइए धुई।[4]

ऋतु गीत

इस श्रेणी में त्योहारों एवं पर्वों पर गाये जाने वाले गीत सम्मिलित किये जा सकते हैं क्योंकि प्रत्येक पर्व अथवा त्योहार बारी-बारी से किसी न किसी ऋतु में आता रहता है। बसन्त ऋतु से ग्रीष्म ऋतु में जब प्रकृति पूरे यौवन पर होती है, झूरी, साकों तथा बीशु गीतों की भरमार होती हैं। इसी तरह वर्षा ऋतु में हरियाली गंगी-झूरी तथा रूमणी गीतों का बाहुल्य रहता है। हेमन्त ऋतु में बुढ़ा गीत एवं हारें, हारुलें गाई जाती हैं। शरद ऋतु की नाटियों तथा गी के गाने के साथ-साथ शरीर की गति भी तीव्र हो उठती है। एक गाथा का उदाहरण प्रस्तुत है:-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

फूलों ला फुलटु डालटी धाई
राजा लागा टिकरी देखणो री बाई
राजे शुणी नोइणी जोबे धुरी
सुतो री कुकड़ी, कुपासो री पुड़ी।[5]

नृत्य गीत

सिरमौर के नृत्य गीतों में नाटी तथा गीह का मुख्य स्थान है। ये गीत अधिकतर वर्णात्मक तथा मनोरंजक होते है। नृत्य गीत का दूसरा रूप रासा नृत्य है। रासा नृत्य के गीतों की लय तीव्र होती है जबकि गीह तथा नाटी गीत मध्य लय में गाये जाते हैं। गीह गीत का उदाहरण देखिए:-

धारो दी बाजो तेरी बाँशुड़ी नेऊलो दी मुएँ शुणी रे
हाथो री छूटो शो कोऊली लागो दो बुलो मीने के रूणी रे।

धार्मिक एवं ऐतिहासिक गीत

हिमाचल के लोक गीतों में धार्मिक भावना के अतिरिक्त आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख रहता है। जिला सिरमौर देवी-देवताओं का वास माना जाता है लोगों का इन देवी-देवताओं में अटूट विश्वास रहता है तथा इन की महीमा पर अनेक गीत गाये जाते हैं। इसी प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित अनेक गीत इस क्षेत्र में प्रचलित हैं जिनका उदाहरण इस प्रकार से है:-

धार्मिक गीत बीजट महाराज

किले रे कुदोइणो जोलो पाणी रे दिवे रे नारणा
पूजा कोरणी बिजटो री।
ऊबा किला कुदोइणो रा, उदा नोरे का घाटो रे नारणा
पूजा कोरणी बिजटो री।
तेरे हुले बुलो पुजारी देवा, थुणगे रे भाटो रे नारणा
पूजा कोरणी बिजटो री।
ऐतिहासिक गीत (पोरसा)
सियाणा सुरीताना गाणा पोरसा बजीरो
पागो भिड़ो मालो री, कोलगी जोंजीरो
धारो फूलो दुदली, घासणी दी गानी
भाटुके थोवे डुंगी रे तीने दोऊरे बानी।[5]

सिरमौरी लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन

किसी भी क्षेत्र के निवासियों की संस्कृति वह सागर है जिसके भीतर अमूल्य निधियां छिपी होती है। जिस प्रकार सागर की कोई परिभाषा नहीं होती है, इसी प्रकार संस्कृति को भी परिभाषा के बन्धन में बांधना तर्क संगत नहीं है।

वस्तुतः संस्कृति मानव के वर्तमान और भावी जीवन की पद्धतियों और कार्यकलापों तथा उनमें सम्मिलित उपादानों का संर्वांगपूर्ण प्रकाश है।7 लोक संगीत सहज गाह्य होने के कारण शीघ्रता से हर उम्र के इंसान को आकर्षित करता है। जिला सिरमौर में लोक गीत प्राचीन काल से मानव का रंजन करते आ रहे हैं। इस क्षेत्र में गाई जाने वाली नाटियाँ, गीह, हारे, वारे, पवाड़े, साके, गंगी, झूरी, रासा लोक गायन शैलियों को लोगों ने उतरोत्तर सुरक्षित रखा है। पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यहाँ जीवन यापन मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा कठिन है, यहाँ की महिलाएँ पुरुषों के साथ मिलकर निलाई, गोड़ाई, घास, ईंधन प्रबन्ध, पशु-चारा तथा जल स्त्रोतों से पानी लाना आदि कार्य करती रहती हैं। यहाँ पर

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

महिलाओं द्वारा विभिन्न त्योहारों एवं विवाह संस्कार पर अनेक गीत गाए जाते हैं। यहाँ के लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। यहाँ के लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन एवं विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस क्षेत्र के लोक गीतों में शास्त्रीय रागों की स्पष्ट एवं अपुष्ट छाया अवश्य नज़र आती है।

इसी प्रकार शास्त्रीय तालों के समकक्ष लोक तालों का भी लोक गीतों में प्रयोग किया जाता है। इस क्षेत्र में विवाह के अवसर पर गाया जाने वाल बधाई गीत जिसे पड़ुआ कहा जाता है, इस प्रकार से है:-

झमा झम हो रही रे इस घर शादी-2
झमा झम हो रही रे बाना मोरा ब्याह के-2
झमा झम हो रही रे बहु मारी ब्याह के-2
झमा झम हो रही रे डोला आया घरां-2

यह गीत ताल कहरवा की बराबर ताल में निबद्ध है तथा कल्याण राग की छाया दृष्टिगोचर होती है। इस गीत को महिलाओं द्वारा सामुहिक रूप से गाया जाता है।

सारे	ग	मं	पमं	पमं	ग	रे	सा
झऽ	मा	ऽ	झऽ	मऽ	हो	र	ही
रे	ग	ग	रे	रे	नि़	-	सा
रे	इ	स	घ	र	शा	ऽ	दी
सा रे	ग	मं	पमं	पमं	ग	रे	सा
झऽ	मा	ऽ	झऽ	मऽ	हो	र	ही
रे	ग	ग	रे	रे	नि	-	सा
रे	बा	ना	मो	रा	ब्या	ऽ	के
X				0			

कार्तिक महीने में पूरे भारतवर्ष में दिवाली का पर्व बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। जिला सिरमौर में इस अवसर पर गाथाएँ गाई जाती हैं जिसे स्थानीय भाषा में 'हार' कहा जाता है। युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरतापूर्वक मृत्यु के कारण किसी योद्धा के मारे जाने पर उसके सेनापति अथवा साथियों की पराजय होने के कारण सम्भवतः इनको स्थानीय भाषा में हार कहा जाता है। इन गीतों को जो लोग गाते हैं, उन्हें बुड़ु कहा जाता है। दो गायक आगे से गाते हैं तथा दो गायक उसी पंक्ति को दोहराते हैं। प्रस्तुत गीत 16 मात्राओं की बुड़ु ताल में निबद्ध है तथा इस गीत में राग जोनपुरी की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है:-

बूड़ी गोआ तू सेणी गो आ
तेरे दाड़ी लागी गोवे पोलू ऐबे
तो बूड़ी गोआ तू सेणी गोआ।

स्वरलिपि:

धम	मप	-	म	रे	म	ग	-	गरे	रेस	-	-	सा	-	प	म
बुड़ी	ऽऽ	ऽ	गो	आ	ऽ	तू	ऽ	सेऽ	णीऽ	ऽ	गो	आ	ऽ	ते	रे
पध	निसां	-	प	-	म	पम	मप	पम	पग	ग	-	ग	-	प	-
दाऽ	ऽऽ	ड़ी	ला	ऽ	गी	गो	वे	पोऽ	ऽऽ	लू	ऽ	ऐ	ऽ	बे	ऽ
X				2				3				4			

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

उपसंहार

जिला सिरमौर का लोक संगीत अपने परम्परागत एवं प्राचीन संस्कृति को संजोए रखने में पूरे प्रदेश में अग्रणी है। यहाँ का लोक संगीत स्वच्छंद, उन्मुक्त, प्राकृतिक एवं शास्त्रीय नियमों के बंधन से मुक्त है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत गातों के रूप में मुखरित हुई है। विभिन्न त्योहारों, उत्सवों, संस्कारों, मेलों एवं ऋतुओं से सम्बंधित अनेक लोक गीत इस क्षेत्र के निवासियों द्वारा गाये जाते हैं। यहाँ की प्राचीन परम्परा एवं लोक संस्कृति को गीतों के माध्यम से वर्णित किया गया है। इस क्षेत्र में लोक गाथाओं का अपार भण्डार है। यहाँ की गाथाएँ, हारे, वारे, पवाड़े, साके, गंगी, झूरी, गीह, नाटी, रासा आदि यहाँ की प्राचीन संस्कृति के परिचायक है। चैत मास में झीणियाँ, ज्येष्ठ मास में शाठी और पाशी द्वारा ठोडा गीत, श्रावण मास में मोण, भिंवरी, गुगा गाथा, गंगी एवं झूरी, दिवाली के त्योहार में हारे एवं हारुलें तथा शिशिर एवं शरद ऋतु में गीह, नाटी और मुजरा गीत इस क्षेत्र के लोक संगीत एवं संस्कृति का जीता जागता उदाहरण है। यहाँ के लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत से क्या सम्बंध है इस विषय को उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है। जिला सिरमौर के लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत की छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस क्षेत्र की लोक तालें भी शास्त्रीय तालों से मिलती-जुलती है। इस अमूल्य नीधि को सुरक्षित करने का यह एक मात्र प्रयास है।

संदर्भ

1. गौतम डॉ. खुशीराम, सिरमौरी लोक साहित्य, पृ. 38
2. गौतम डॉ. खुशीराम, सिरमौरी लोक साहित्य, पृ. 43
3. गुप्ता आर, हिमाचल प्रदेश सामान्य ज्ञान, पृ. 249
4. बख्शीपवन, गिरीपार का हाटी समुदाए, पृ. 67
5. शर्मा, डां. रूप राम, सिरमौर का इतिहास, पृ. 28
6. साक्षात्कार, नीताराम गाँव-बाग-माईना, जिला सिरमौर (हि. प्र.)
7. जस्टा हरिराम, हिमाचल की संस्कृति, पृ. 29